BA Part III (H)
Paper V

Dr. Chiranjeev Kr Thakur
Assistant Professor (GT)
Department of Sociology
VSJ College Raj Nagar

Lecture III

नातेदारी (परिभाषा) => नातेदारी को बहुत से विद्वानों ने परिभाषित किया है जो इस प्रकार है -

रेडक्लिफ ब्राउन के अनुसार " नातेदारी सामाजिक उद्देश्यों के लिए स्वीकृत वंश सम्बन्ध है तथा यह सामाजिक सम्बंधों के परम्परागत स्वरूप का आधार है।"

इस परिभाषा से स्पष्ट है कि नातेदारी समूह में परिवार के बाद वंश आते है। एक ही वंश के सदस्य नातेदार होते है। इसे सामाजिक मान्यता मिली होती है।

चार्ल्स विनिक के अनुसार, " नातेदारी व्यवस्था में समाज द्वारा प्राप्त वे सम्बन्ध आ सकते है जो कि अनुमानित और वास्तविक वंशावली सम्बन्धों पर आधारित है।"

नोट्स एण्ड क्वेरीज आन एन्थ्रोपोलॉजी के अनुसार " नातेदारी वह सम्बन्ध है जो माता-पिता सं-

उनके वर्चे अथवा सहोदर के सम्बन्धों द्वारा वास्तव में या अनुमानित रूप से ज्ञात किया जा सकता है।"

इस परिभाषा से स्पष्ट है कि नातेदारी व्यवस्था रक्त सम्बन्धों पर आधारित तो होती है साथ ही जिन कृत्रिम व अनुमानित संबंध को समाज की मान्यता मिली होती है, वे भी नातेदारी सम्बन्ध में आते हैं।

डा० रिवर्स के अनुसार," संगोत्रता की परिभाषा उस सम्बन्ध से है जो वंशावलियों के माध्यम से निर्धारित तथा वर्णित की जा सकती है।"

लूसी मेयर के अनुसार," नातेदारी में सामाजिक सम्बन्धों में व्यक्त किया जाता है।"